Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
www.researchguru.net
Volume-15, Issue-3, December-2021

कवि कुंजबिहारी पाण्डेय की कविता में व्यंग्य

डॉ. बृजेश राठौड

एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, गुजरात आर्ट्स एंड कामर्स कालेज सायं एलिसब्रिज, अहमदाबाद।

हिन्दी कविता में व्यंग्य का स्वर वाच्यार्थ और लक्ष्यार्थ की अपेक्षा अधिक सशक्त हुआ है। व्यंग्य का रास्ता तलवार की धार पर दौडने के समान है। काव्य सृजन के स्तर पर अनुभव और अभिव्यक्ति के जो विविध रूप मिलते हैं उनमें एक व्यंग्य भी है। डॉ. शिवप्रसाद सिंह ने कहा है- ''सन् साठ के बाद से कविता के क्षेत्र में बहुत अन्तर आया है, खास तौर से भाषा और अभिव्यक्ति की दृष्टि से।'' अनेक विसंगतियों ने हिन्दी के कवियों को व्यंग्य की और व्यापकता के साथ मोडा है। कविता करने वाले सभी कवियों की कविताओं में व्यंग्य को आसानी से खोजा जा सकता है। लगभग अधिकतर कवियों ने व्यंग्य का प्रयोग हथियार के रूप में किया है। व्यंग्य का प्रहारक अंदाज समकालीन कविता का केन्द्रीय तत्त्व बन चुका है। डॉ. शेरगंज गर्ग ने कहा है कि - ''कहीं व्यक्ति अपनी निजी तकलीफों, कष्टों, हताशा आदि को व्यंग्यात्मक अभिव्यक्ति देकर समाज पर आक्रमण करता हुआ विडम्बनाओं की व्याख्या कर रहा है, और कहीं वह समाज की व्यापक विसंगतियों पर प्रहार करके उसकी धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक गाँठो को खोलने की कोशिश कर रहा है।'' व्यंग्य कविताओं का संसार अलग है और इन रचनाओं में युगसत्य का दर्पण बनने की क्षमता नहीं। मनोरंजन के लिए काव्यसृष्टि करने वाले हास्य कवियों को अलग कर देने के बाद भी व्यंग्य कवियों की कमी नहीं है। जैसे धूमिल की कविता ''मोचीराम'' के नायक की यह काव्य पंक्तियाँ व्यंग्य का उत्कृष्ट उदाहरण है-

''बाबूजी! सच कहूं, मेरी निगाह में

न कोई छोटा है न कोई बडा है।

मेरे लिए हर आदमी एक जोडी जूता है।

जो मेरे सामने मरम्मत के लिए खडा है।''

इन पंक्तियों में मोचीराम की व्यंग्यात्मक दृष्टि की कलाबाजी देखते ही बनती है।

छोटे-बडे शहर से निकलने वाली पत्रिकाओं में प्रकाशित विसंगति-व्यंजक कविताओं ने सिद्ध कर दिया है कि सत्य कथन की व्यंग्योचित विशेषताएँ आज कविधर्म बन चुकी है। जो कुछ भी लिखा जा रहा है उसके मूल में कहीं न कहीं व्यंग्य अवश्य है। व्यंग्य को व्यंग्य समझकर काव्य रचना करने वाले ही सच्चे व्यंग्य कवि है। व्यंग्य कवियों की सूची बडी लम्बी है। व्यंग्य कविता से साम्प्रत जीवन में व्याप्त समस्याओं और विषमताओं का अंकन करने के संदर्भ में व्यंग्य कवियों ने व्यापक स्तर पर अपनी पैनी दृष्टि डाली है।

अन्य कवियों ने जीवन के समस्त क्रिया कलापों, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक आदि क्षेत्रों से प्रतीक शब्दों को ग्रहण किया है, विविध आयामों की सजग अभिव्यक्ति आधुनिक व्यंग्य कविता में उपलब्ध है।

स्वर्गीय कवि कुंजबिहारी पाण्डेय बडनगर के निवासी थे। बडनगर को शेष दुनिया के जोडनेवाली पश्चिम रेलवे की एक मीटर गेज रेलवे लाईन खण्डवा, अजमेर लाईन। इससे लोग रतलाम पहुँचकर दिल्ली-मुंबई कहीं भी पहुँच सकते हैं। व्यावसायिक दृष्टि से बडनगर शुरू में इन्दौर-उज्जैन से जुड़ा रहा। यहाँ की चामला नदी कभी इस कस्बे की लाईफ-लाईन रही, तो पश्चिम की यह मीटर गेज लाईन खण्डवा-अजमेर लाईन यहाँ की भाग्य रेखा कुल मिलाकर यह शांत और अच्छी जगह थी।

व्यंग्यकार कवि पाण्डेय जी ने श्रोताओं को खूब हँसाया-गुदगुदाया और तीखें व्यंग्य के माध्यम से कुछ सोचने के लिए भी बाध्य कर दिया। उनकी एक बहुचर्चित कविता ''डंडा-झण्डा'' का एक उदाहरण देखिये-

''नारे लगा रहे हैं ये सब, रहे हमारा ऊँचा झण्डा।

पर डण्डे का नाम न लेता कोई, जिससे ऊँचा झण्डा।

डण्डा ऊँचा होता नहीं, तो कैसे झण्डा ऊँचा होता ?

डण्डा नीचा करो देख लो, कैसे झण्डा ऊँचा होता ?

कितना ही बेहुदा हो डण्डा पर झण्डा लहराता है।

डण्डा-झण्डा मिल जाने से, झण्डा झण्डा कहलाता है।''

इस कविता में डण्डा और झण्डा के बहाने एक यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है। इनकी कविता में व्यंग्य के साथ हास्य के दर्शन भी हो जाते हैं।

उनकी एक कविता ''बिजली के खम्भे से'' में उनकी सोच देखते बनती है।

''सिर पर तार कैसे हैं, नीचे पैर गंडे हैं।

बता सकेंगे ? किस चुनाव में आप खडे हैं ?

लगता ऐसा एक आँख का, एक पैर का,

खडा सडक पर, गूँगा चौकीदार शहर का

टोंमी टाँग उठाये, तुझ पर मूत रहा है

बिजली के खम्भे से कोई पूछ रहा है।''

पाण्डेय जी हर चीज को सूक्ष्मता से पकडते हैं। उनकी दृष्टि से कुछ छूटता नहीं है। उन्हें पास बिठाने में जरा भी देर नहीं लगती। ''आगरे में रूक गई! ट्रेन चीखती हुई'' कविता का यह नजारा तो देखिये-

''तीन ट्रन्क की वो बेडींग ले के मटरूआ चला।

शेख जी अवाक् थे, देख कुली की कला,

फर्स्ट क्लास में डटे, ऐंठते थे चाँदमल,

आदमी को जानवर, समझते थे चाँदमल।''

कवि पाण्डेय जी सच्चे देशभक्त थे, देश में जो विसंगतियाँ है उस पर उन्होंने कडा व्यंग्य किया है। जहाँ एक ओर एक व्यक्ति भूखा मर रहा है तो दूसरा कुछ किये बिना ही मलाई चट

कर रहा है, इस समाज के ऐसे विसंगति भरे चित्र उनकी कविता में सहज आ गये हैं। जैसे-

"दोनों ही आजाद देश में, आजादी के सुख का अन्तर,

आप कुछ इस तरह समझिये, आजादी की कार

कि दोनों बैठ उसमें, सुक्खू है ड्राइवर,

और मालिक साहू है.....।"

हमारे समाज में कवियों की कोई इज्जत नहीं रह गयी है। कवियों को सभी लोग निठल्ला समझते हैं। शायद यह दृष्टिकोण का भी फर्क हो सकता है। पाण्डेय जी ने स्वयं पर व्यंग्य करते हुए अपनी वेदना को वाचा दी है।

"मुझसे एक ने पूछा- आप क्या करते हैं ?

मैंने कहा- कविता करता हूँ,

कविता तो ठीक है! आप काम क्या करते हैं ?

मुझे लगा, कविता करना, कोई काम नहीं है।

कवि वह करता है- जिसको कोई काम नहीं है।"

इस भरी पूरी दुनिया में कोई जगह है कवि के लिए- कविता के लिए ? कवि यदि अपना काम अभी कर रहा है या कि किसी धुन में किए जा रहा है तो उसकी तरफ किसका ध्यान है ? सच तो यह है कि आदमी जरूरतों की सूची में कविता अंतिम स्थान पर भी नहीं है।

एक समय था, जब कवि और कविकर्म को समाज सम्मान के साथ देखता था। बडनगर के पास गर्व करने लायक और तमाम नामों में एक नाम कुंजबिहारी पाण्डेय का है। अब गर्व करने का आधार कुछ वीगर है। कविता तो कतई नहीं। स्व. पाण्डेय जी की तरह यही बात तो 'धूमिल' ने अपने ढंग से कहीं थी-

"कविता में जाने से पहले,

मैं आप ही से पूछता हूँ।

इससे न चोली बन सकती है, न चोंगा,

तब आपै कहो- ईस ससुरी कविता को।

जंगल से जनता तक ढोने से क्या होगा ?

आपै जवाब दो, मैं इसका क्या करूँ ?"

आज तो पाण्डेय जी को गुजरे भी काफी समय हो गया है। मानसिकता बदल गई, परिदृश्य बदल गया। कवि सम्मेलन कवि सम्मेलन नहीं रहे। आज मंच पर से कविता गायब हो गई है। कु-कवियों ने मंच पर अधिकार कर लिया है। पाण्डेय जी ने कभी इस पर लिखा था-

"कविता पर पिटती है ताली, या ताली में पिटती- कविता।"

इसमें आज कवि सम्मेलनों के मंच की स्थिति और श्रोताओं की मानसिकता के गूढार्थ निहित है।

वह समय ऐसा था कि कविता संग्रह मुश्किल से प्रकाशित होते थे। पर तब भी कविता सीधे समाज में अपनी जगह बना लेती थी।- हरिवंशराय 'बच्चन', शिवमंगल सिंह 'सुमन' की कविताएँ यदि सीधा असर पैदा करती थीं तो कुंजबिहारी पाण्डेय जी जैसे कवियों की कविताएँ भी। हमारे आलोचक तो कवि 'सुमन' को भी कवि

मानने में संकोच करते हैं, तो कुंजबिहारी पाण्डेय पर उनका ध्यान भला क्यों कर जाने लगा ?

समय-समय पर उस पीढी ने अपनी कविताओं को ईमानदारी से पेश किया। आज उनके काम को अब नई पीढी भूलती जा रही है। नई पीढी के लिए तो कवि कुंजबिहारी पाण्डेय का एक अपरिचित नाम ही होगा। यदि प्रमाणिकता से अतीत को टटोलेंगे तो ये कवियों के सारे नाम महत्वपूर्ण और अपरिहार्य लगेंगे। ऐसे ही तमाम नामों में कुंजबिहारी पाण्डेय जी का नाम एक महत्त्वपूर्ण नाम है, पूरे हिन्दी व्यंग्य काव्य फलक पर।

संदर्भ ग्रंथ :

1.हिंदी साहित्य युग और प्रवृतियां डॉ शिवकुमार शर्मा।

2.नई कविता और अस्तित्ववाद। रामविलास शर्मा

3.कविता के नए प्रतिमान डॉ नामवर सिंह।

4.कविता के आर पार नंदकिशोर नवल